Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

*A Referred Peer Review Research Journal*

# Vindhyan Bloom

***ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026***

| *Manuscript Information* | *Research Paper* | *Paper No. VBRP-20* |
|---|---|---|

## प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण : सिंधु सभ्यता से गुप्तकाल तक एक ऐतिहासिक अध्ययन

***अभिलाषा कुमारी सिंह**, शोधार्थी, इतिहास विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव महाविद्यालय उज्जैन*

**सारांश:** प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग था। भारतीय सभ्यता ने प्रकृति को माता, देवता और जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार किया। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक, मौर्य और गुप्तकाल तक पर्यावरण संरक्षण की अनेक परंपराएँ विकसित हुईं, जिनमें जल संरक्षण, वन संरक्षण, पशु संरक्षण, स्वच्छता व्यवस्था तथा प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर विशेष बल दिया गया। प्राचीन भारतीय समाज ने प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना को अपनाया और पर्यावरणीय संतुलन को मानव जीवन की आधारशिला माना। वर्तमान समय में जब विश्व जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई और जैव विविधता के संकट जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब प्राचीन भारतीय पर्यावरणीय दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। इस शोध पत्र में सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, उत्तर वैदिक एवं महाजनपद काल, मौर्यकाल तथा गुप्तकाल में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणाओं और परंपराओं का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

**मुख्य शब्द:**पर्यावरण संरक्षण,प्रकृति पूजा, जल संरक्षण, वन संरक्षण।

### प्रस्तावना

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति और जीव-जंतु मिलकर जीवन चक्र को संचालित करते हैं। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ पर्यावरण और मनुष्य का संबंध भी गहरा होता गया। आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीक के विकास ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, किन्तु इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है। औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के कारण पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो गया है। आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जल संकट तथा जैव विविधता का ह्रास वैश्विक समस्या बन चुके हैं। ऐसे समय में प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारतीय परंपरा में प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना प्राचीन काल से विद्यमान रही है। भारतीय चिंतन में प्रकृति को केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन का आधार माना गया। मनुष्य और प्रकृति के मध्य संतुलन को सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का आवश्यक तत्व समझा गया।

### सिंधु घाटी सभ्यता में पर्यावरण संरक्षण

सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है, विश्व की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक थी। इसका विकास लगभग 2500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व के मध्य हुआ। इसके प्रमुख नगरों मेंहड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धौलवीरा तथाप्रमुख थे। इस सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसका सुव्यवस्थित नगर नियोजन और पर्यावरणीय दृष्टिकोण था। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सड़कों, नालियों और स्नानागारों से यह स्पष्ट होता है कि उस समय स्वच्छता और जल प्रबंधन को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। प्रत्येक घर से जल निकासी के लिए पक्की

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

नालियाँ बनाई गई थीं जो मुख्य नालियों से जुड़ी होती थीं। यह व्यवस्था न केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, बल्कि पर्यावरणीय स्वच्छता की उन्नत समझ को भी प्रदर्शित करती है। धौलावीरा में वर्षा जल संचयन की अत्यंत विकसित व्यवस्था थी, जहाँ बड़े-बड़े जलाशय बनाए गए थे। इससे यह प्रमाणित होता है कि सिंधु सभ्यता के लोग जल संरक्षण के महत्व को समझते थे। इसके अतिरिक्त वृक्षों और पशुओं के प्रति सम्मान की भावना भी इस सभ्यता में विद्यमान थी। पीपल वृक्ष तथा बैल, हाथी और अन्य पशुओं की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं, जो प्रकृति पूजा और जैव विविधता संरक्षण की परंपरा को दर्शाती हैं।

## वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण

वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण भारतीय जीवन और संस्कृति का अभिन्न अंग था। ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद और यजुर्वेद में प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन मिलता है। वैदिक ऋषियों ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को पंचमहाभूतों के रूप में स्वीकार किया और इन्हें जीवन का आधार माना। अथर्ववेद में पृथ्वी को माता कहा गया है— "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः", अर्थात पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। यह विचार पर्यावरण संरक्षण की गहरी चेतना को व्यक्त करता है। वैदिक समाज में नदियों को देवी स्वरूप माना गया। गंगा, यमुना, सरस्वती और नर्मदा जैसी नदियों की पूजा की जाती थी, जिससे जल स्रोतों की पवित्रता और संरक्षण सुनिश्चित होता था। वृक्षों को भी धार्मिक महत्व प्रदान किया गया। पीपल, बरगद, नीम और तुलसी जैसे वृक्षों की पूजा की जाती थी तथा उन्हें काटना पाप माना जाता था। इससे वनों और वृक्षों का संरक्षण संभव हुआ। पशु-पक्षियों के प्रति भी करुणा और संरक्षण की भावना थी। गाय को विशेष महत्व दिया गया तथा पशु हिंसा को अनुचित माना गया। इस प्रकार वैदिक काल में धर्म और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक थे।

## उत्तर वैदिक एवं महाजनपद काल में पर्यावरण चेतना

उत्तर वैदिक काल और महाजनपद काल में कृषि, व्यापार और नगरों का विकास हुआ, किन्तु इसके साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने पर भी ध्यान दिया गया। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में जल संरक्षण और भूमि की उर्वरता बनाए रखना आवश्यक था। इसलिए तालाबों, कुओं और सिंचाई साधनों का निर्माण किया गया। आश्रम व्यवस्था प्रायः प्राकृतिक वातावरण में विकसित हुई, जहाँ ऋषि-मुनि प्रकृति के निकट रहकर जीवन व्यतीत करते थे। इस काल में बौद्ध और जैन धर्मों का उदय हुआ, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण को नई दिशा प्रदान की। Gautama Buddha ने सभी जीवों के प्रति करुणा और अहिंसा का संदेश दिया। बौद्ध धर्म में वृक्षारोपण और वन संरक्षण को महत्व दिया गया। Mahavira ने "अहिंसा परमो धर्मः" का सिद्धांत प्रस्तुत किया तथा सूक्ष्म जीवों तक की रक्षा पर बल दिया। जैन धर्म में जल, वायु और वनस्पति को भी जीव माना गया। इस प्रकार इस काल में पर्यावरण संरक्षण नैतिक और धार्मिक कर्तव्य बन गया।

## मौर्यकाल में पर्यावरण संरक्षण

मौर्यकाल में पर्यावरण संरक्षण को राज्य नीति का स्वरूप प्राप्त हुआ। Ashoka ने पर्यावरण और जीव संरक्षण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके अभिलेखों में वृक्षारोपण, पशु संरक्षण और जल संरक्षण का उल्लेख मिलता है। अशोक ने सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाए, यात्रियों के लिए कुएँ और विश्रामगृह बनवाए तथा औषधीय पौधों के संरक्षण को बढ़ावा दिया। पशु हत्या पर नियंत्रण लगाया गया और कई पशुओं के वध पर प्रतिबंध लगाया गया। अशोक की नीतियाँ केवल मानव कल्याण तक सीमित नहीं थीं, बल्कि समस्त जीव जगत और प्रकृति के संरक्षण पर आधारित थीं। मौर्यकाल में सिंचाई व्यवस्था के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया। नहरों, तालाबों और जलाशयों का निर्माण कराया गया जिससे कृषि उत्पादन बढ़ा और जल संरक्षण सुनिश्चित हुआ। इस प्रकार मौर्यकाल प्राचीन भारत में संगठित पर्यावरण संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

## गुप्तकाल में पर्यावरण संरक्षण

गुप्तकाल को भारतीय संस्कृति का स्वर्णयुग कहा जाता है। इस काल में साहित्य, कला, विज्ञान और धर्म का व्यापक विकास हुआ तथा प्रकृति के प्रति

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

गहरी संवेदनशीलता दिखाई देती है। Kalidasa की रचनाओं में प्रकृति का अत्यंत सुंदर और जीवंत चित्रण मिलता है। उनकी कृतियों में ऋतुओं, पर्वतों, नदियों, वनों और पशु-पक्षियों का वर्णन भारतीय समाज की पर्यावरणीय चेतना को व्यक्त करता है। गुप्तकाल में कृषि और सिंचाई व्यवस्था का विकास हुआ। तालाबों, नहरों और जलाशयों का निर्माण कराया गया तथा प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर बल दिया गया। धार्मिक दृष्टि से भी वनों और पवित्र उपवनों को संरक्षण प्रदान किया गया। मंदिरों और आश्रमों के आसपास हरित क्षेत्र विकसित किए जाते थे। इस काल में प्रकृति को सौंदर्य, धर्म और जीवन का आधार माना गया।

## प्राचीन भारत की पर्यावरणीय परंपराएँ और आधुनिक प्रासंगिकता

प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण जीवन शैली का महत्वपूर्ण अंग था। जल संरक्षण के लिए कुएँ, तालाब, बावड़ियाँ और वर्षा जल संचयन की व्यवस्था विकसित की गई। वन संरक्षण के लिए देववन और पवित्र उपवनों की परंपरा थी। वृक्षों और पशुओं को धार्मिक महत्व देकर उनका संरक्षण सुनिश्चित किया गया। कृषि में जैविक खाद और फसल चक्र का उपयोग किया जाता था जिससे भूमि की उर्वरता बनी रहती थी। स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता था, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण सिंधु सभ्यता की नालियाँ और स्नानागार हैं। भारतीय दर्शन में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा प्रकृति और समस्त जीवों के प्रति समान संवेदना का संदेश देती है। आधुनिक समय में जब विश्व पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है, तब प्राचीन भारतीय परंपराएँ सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

## निष्कर्ष

प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक कर्तव्य था। सिंधु घाटी सभ्यता की स्वच्छता और जल प्रबंधन प्रणाली, वैदिक काल की प्रकृति पूजा, बौद्ध और जैन धर्म की अहिंसा की भावना, मौर्यकाल की राज्य नीतियाँ तथा गुप्तकाल की सांस्कृतिक चेतना पर्यावरण संरक्षण की समृद्ध परंपरा को दर्शाती हैं। भारतीय सभ्यता ने प्रकृति के साथ संतुलन और सह-अस्तित्व को मानव जीवन का आधार माना। वर्तमान समय में बढ़ते पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान और परंपराओं का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है। यदि आधुनिक समाज प्राचीन भारतीय पर्यावरणीय मूल्यों को अपनाए, तो सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है।

## संदर्भ सूची


- शर्मा, रामशरण — *प्राचीन भारत का इतिहास*
- थापर, रोमिला — *अशोक और मौर्य साम्राज्य*
- उपेन्द्र सिंह — *भारत का प्राचीन इतिहास*
- ऋग्वेद
- अथर्ववेद
- यजुर्वेद
- त्रिपिटक साहित्य
- जैन आगम साहित्य
- कालिदास — *अभिज्ञान शाकुंतलम्*
- डी.डी. कोसंबी — *प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता*
- ए.एल. बाशम — *The Wonder That Was India*
- भारतीय संस्कृति कोश, नई दिल्ली।